

News Published in –



**दैनिक भास्कर**

Published on – 13 February 2020

## मानव संग्रहालय में इस माह का प्रादर्श गांज

सिटी रिपोर्टर। इंदिरा गांधी मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में बुधवार को फरवरी माह के प्रादर्श का उद्घाटन हुआ। इस बार प्रादर्श के रूप में गांज को प्रदर्शित किया गया है। गांज बिहार के मधुबनी जिले की गुरी समुदाय के लोगों द्वारा जलीय बीज इकट्ठा करने का उपकरण है। इसका उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक डॉ. पीके मिश्र ने किया। प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन संग्रहालय सहायक श्रीकांत गुप्ता ने किया है। इस प्रादर्श को 12 मार्च तक संग्रहालय में देखा जा सकता है।





News Published in –

पत्रिका

Published on – 13 February 2020

## गांज से समुदाय निकालता है गुरी



**भोपाल** ♦ राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में बुधवार को माह का प्रादर्श शृंखला के तहत फरवरी के प्रादर्श के रूप में ग्राम सप्त पार्वती टोल, मधुबनी, बिहार के मल्लाह समुदाय का गुरी, जलीय बीज इकट्ठा करने का उपकरण गांज का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक डॉ. पीके मिश्र ने किया। प्रादर्श का संकलन संग्रहालय एसोसिएट श्रीकांत गुप्ता ने किया। श्रीकांत ने बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श बिहार

के मधुआरे समुदाय मल्लाह द्वारा मखाने के बीज गुरी एकत्र करने के लिए प्रमुखतः एक पारम्परिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मल्लाह समुदाय की आर्थिक गतिविधि है। ये बांस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है। जिसे दाँए या बाँए हाथ से पकड़कर पानी के अंदर आसानी से घसीटा जाता है। कीचड़ के साथ मखाने के बीज इकट्ठे हो जाते हैं।





News Published in –  
**हरिभूमि**

Published on – 13 February 2020

## मखाने के बीज खोजने वाले 'गांज' की समझी कार्यप्रणाली

हरिभूमि न्यूज » भोपाल

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन कीर्ति संकुल में बुधवार को माह के प्रादर्श श्रृंखला का शुभारंभ किया गया। जहां प्रादर्श के रूप में जिला मधुबनी, बिहार के मल्लाह समुदाय का गुरी (जलीय बीज) इकट्ठा करने का उपकरण 'गांज' का उदघाटन संग्रहालय के निदेशक, डॉ. पी के मिश्र द्वारा किया गया। इस अवसर अनेक गणमान नागरिक उपस्थित थे। इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता (संग्रहालय एग्रेसिस्ट) द्वारा किया गया है। वहीं कई संबंधित विषयों पर चर्चा की गई।

**बिहार के मल्लाह समुदाय जलीय बीज इकट्ठा करने में करते हैं उपयोग**

**मानव संग्रहालय के माह के प्रादर्श में हुआ आयोजन**

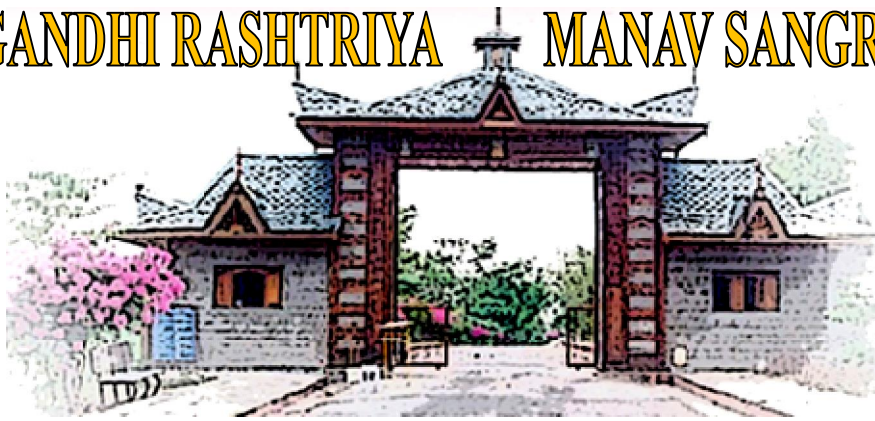


### टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा उपकरण

संयोजक गुप्त से बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श 'गांज' बिहार के मधुबनी समुदाय 'मल्लाह' द्वारा मखाने के बीज 'गुरी' एकत्र करने के लिए एक परम्परागत उपकरण है। गुरी एकत्र करके मल्लाह समुदाय की एक महत्वपूर्ण अर्थिक गतिविधि है। जिला मधुबनी बिहार से संकलित यह प्रादर्श बीस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है। जिसे बाएँ या दायें हाथ से पकड़कर पानी के ऊपर आसानी से घसीटा जाता है जिसके ऊपर कीचड़ के साथ मखाने के बीज भी इकट्ठा हो जाते हैं। बीजों को पानी से साफ कर गुरी को जलाकर लेवा है।

### मखाना पोषक और औषधीय गुणों से भरपूर

मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक जलीय उपग्रह है। जिसका उपयोग आमतौर पर पूजापाठ और व्रत के दौरान होता है। सूखे केवे तथा मिठई, लम्कनीय, खीर आदि व्यंजनों में भी मखाने का उपयोग किया जाता है। दरअसल मखाना औषधीय गुणों से भरपूर है। इसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन, कैल्शियम, निलरन और कई प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं। बिहार में मखाने का सबसे ज्यादा उत्पादन मधुबनी में होता है।



News Published in –



दैनिक जागरण

Published on – 13 February 2020

## मखाने के बीज एकत्रित करने का यंत्र है 'गांज'

### मानव संग्रहालय

#### ● जागरण सिटी रिपोर्टर ●

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतर्गत वीथि संकुल में बुधवार को 'माह के प्रादर्श' श्रृंखला के अंतर्गत माह फरवरी 2020 के प्रादर्श के रूप में ग्राम सप्त पार्वती टोल, जिला मधुबनी, बिहार के मझाह समुदाय का गुरी (जलीय बीज) इकट्ठा करने का उपकरण 'गांज' का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक डॉ. पीके मिश्र द्वारा किया गया। इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता (संग्रहालय एसोसिएट) द्वारा किया गया है। इस अवसर पर श्री गुप्ता ने बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श 'गांज' बिहार के मझाह समुदाय 'मझाह' द्वारा मखाने के बीज 'गुरी' एकत्र करने हेतु प्रमुखतः एक पारंपरिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मझाह समुदाय की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। जिला मधुबनी बिहार से संकलित यह प्रादर्श बांस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है, जिसे दाएं या बाएं हाथ से पकड़कर पानी के अंदर आसानी से घसीटा जाता है। इसके अंदर कीचड़ के साथ मखाने के बीज भी इकट्ठा हो जाते हैं। कीचड़ को पानी से साफ कर गुरी को अलग कर लिया जाता है।



### मखाना क्या है?

मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक जलीय उत्पाद है, जिसका उपयोग आमतौर पर पूजापाठ और व्रत के दौरान होता है। सूखे में तया मिठाई, नमकीन, खीर आदि बनाने में भी मखाने का उपयोग किया जाता है। बिहार में मखाने का सबसे ज्यादा उत्पादन मधुबनी में होता है। मखाने का कुल उत्पादन में से 80 फीसदी अकेले बिहार में होता है।





News Published in –

**नवदुनिया**

Published on – 13 February 2020

## मखाने के बीज इकट्ठा करने का पारंपरिक उपकरण है गांज

**भोपाल (नवदुनिया रिपोटर)।** इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में माह के प्रादर्श श्रृंखला के अंतर्गत माह फरवरी के प्रादर्श के रूप में बुधवार को ग्राम सप्त पार्वती टोल, जिला मधुबनी (बिहार) के मल्लाह समुदाय का गुरी (जलीय बीज) इकट्ठा करने का उपकरण गांज का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक, डॉ. पीके मिश्र द्वारा किया गया। इस अवसर अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता (संग्रहालय एसोसिएट) द्वारा किया गया है।

इस अवसर पर गुप्ता ने बताया कि गांज बिहार के मधुआरे समुदाय मल्लाह द्वारा मखाने के बीज गुरी एकत्र करने हेतु प्रमुखतः एक पारंपरिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मल्लाह समुदाय की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। मधुबनी (बिहार) से संकलित यह प्रादर्श बांस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है। जिसे दाएं या बाएं हाथ से पकड़कर पानी के अंदर आसानी

### मधुबनी

- मानव संग्रहालय में माह के प्रादर्श का शुभारंभ
- कीचड़ में उगते हैं मखाने के बीज, मल्लाह समुदाय निकालता है

से घसीटा जाता है, जिसके अंदर कीचड़ के साथ मखाने के बीज भी इकट्ठे हो जाते हैं, कीचड़ को पानी से साफ कर गुरी को अलग कर लिया जाता है।

**गांज बनाने की विधि व संरचना:** गांज बांस व लती से निर्मित एक उपकरण है, जिसका अग्रभाग चौड़ा व बेलनाकार खोखला होता है तथा पिछला छोर मुड़ा हुआ उठा बंद होता है, जो कि दाएं या बाएं हाथ से पकड़कर पानी के अंदर घसीटने में सहायक होता है। यह सींग की आकृति के सामान दिखाई देने वाला एक विशिष्ट प्रकार का प्रादर्श है, जिसकी सहायता से मखाने का बीज गुरी एकत्र करने का कार्य किया जाता है।

**मखाना क्या है? :** मखाना पोषक तत्वों से भरपूर एक जलीय उत्पाद है।



गांज जिसे मखाने के बीज इकट्ठा करने में इस्तेमाल किया जाता है। ● आयोजक

जिसका उपयोग आमतौर पर पूजापाठ और व्रत के दौरान होता है। सूखे मेवे तथा मिठाई, नमकीन, खीर आदि बनाने में भी मखाने का उपयोग किया जाता है। मखाना औषधि गुणों से भरपूर है। इसमें प्रोटीन एंटीऑक्सीडेंट, विटामिन, कैल्शियम, मिनरल और कई प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं। बिहार में मखाने का सबसे ज्यादा उत्पादन मधुबनी में होता है यहाँ हर एक तीज त्यौहारों व शादी विवाह के अवसरों पर इसका उपयोग किया जाता है। विशेष रूप से मनाए जाने वाले स्थानीय पर्व कोजागरा के अवसर पर लड़की पक्ष के लोग मखाने से बने विभिन्न प्रकार के पकवान व प्रसाद बड़े से टोकरी (डाला) में भरकर लड़के पक्ष के घर पर ले जाते हैं। जिसे लड़के पक्ष के घर वाले अपने आस-पड़ोस तथा रिश्तेदारों में बांटते हैं अर्थात् मधुबनी में मखाने का एक विशेष महत्व है। इस प्रकार मखाने का कुल उत्पादन में से 80 फीसद अकेले बिहार में होता है, इसके अलावा मणिपुर असम, पश्चिम बंगाल, ओडिशा जैसे राज्यों में भी मखाने की खेती होती है।



News Published in –

दैनिक  
**दबंग दुनिया**  
विप्लव जनक, विप्लव खबर

Published on – 13 February 2020

## मानव संग्रहालय में मल्लाह समुदाय का 'गुरी' होगा माह का प्रादर्श

मोपाल » सिटी रिपोर्टर

ईंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में बुधवार को माह के प्रादर्श श्रृंखला के अंतर्गत फरवरी 2020 के प्रादर्श के रूप में ग्राम सप्त पार्वती टोल, जिला मधुबनी, बिहार के मल्लाह समुदाय का गुरी (जलीय बीज) इकट्ठा करने का उपकरण गांज का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक, डॉ. पीके मिश्र द्वारा किया गया।

इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता (संग्रहालय एशोसिएट) द्वारा किया गया है। इस अवसर पर गुप्ता ने बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श गांज बिहार के



मल्लाह समुदाय मल्लाह द्वारा मखाने के बीज गुरी एकत्र करने हेतु प्रमुखतः एक पारम्परिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मल्लाह समुदाय की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। जिला मधुबनी

बिहारसे संकलित यह प्रादर्श बाँस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है। जिसे दाँए या बाँए हाथ से पकड़कर पानी के अन्दर आसानी से घसीटा जाता है जिसके अन्दर कीचड़ के

साथ मखाने के बीज भी इकट्ठे हो जाते हैं कीचड़ को पानी से साफ कर गुरी को अलग कर लिया जाता है। गांज बनाने की विधि व संरचना - गांज बाँस व लत्ती से निर्मित एक उपकरण है, जिसका अग्रभाग चौड़ा व बेलनाकार खोखला होता है तथा पिछला छोर मुड़ा हुआ उठा बन्द होता है जोकि दाये या बाये हाथ से पकड़कर पानी के अन्दर घसीटने में सहायक होता है। यह सिंग की आकृति के सामान दिखाई देने वाला एक विशिष्ट प्रकार का प्रादर्श है जिसकी सहायता से मखाने का बीज 'गुरी' एकत्र करने का कार्य किया जाता है।





News Published in –



Published on – 13 February 2020

## फरवरी माह का प्रादर्श बना गांज

भोपाल(काप्र)।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में आज माह के प्रादर्श श्रृंखला के अंतर्गत माह फरवरी 2020 के प्रादर्श के रूप में ग्राम सप्त पार्वती टोल, जिला मधुबनी, बिहार के मल्लह समुदाय का गुरी ( जलीय बीज ) इकट्ठा करने का उपकरण गांज का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक, डॉ पीके मिश्र द्वारा किया गया।

इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता (संग्रहालय एशोसिएट) द्वारा किया गया है। श्री गुप्ता ने बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श गांज बिहार के मल्लह समुदाय मल्लह द्वारा मखाने के बीज गुरी एकत्र करने हेतु प्रमुखतः एक पारम्परिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मल्लह समुदाय की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। जिला मधुबनी बिहारसे संकलित



यह प्रादर्श बाँस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है। जिसे दाँए या बाँए हाथ से पकड़कर पानी के अन्दर आसानी से घसीटा जाता है जिसके अन्दर कीचड़ के साथ मखाने के बीज भी इकट्ठे हो जाते हैं कीचड़ को पानी से साफ कर गुरी को अलग कर लिया जाता है।

**गांज बनाने की विधि व संरचना:** गांज बाँस व लत्ती से

निर्मित एक उपकरण है, जिसका अग्रभाग चौड़ा व बेलनाकार खोखला होता है तथा पिछला छोर मुड़ा हुआ उठा बन्द होता है जोकि दाये या बाये हाथ से पकड़कर पानी के अन्दर घसीटने में सहायक होता है। यह सिंग की आकृति के सामान दिखाई देने वाला एक विशिष्ट प्रकार का प्रादर्श है। जिसकी सहायता से मखाने का बीज गुरी एकत्र करने का कार्य किया जाता है।



News Published in –

**स्वदेश**  
राष्ट्रीय विचार, सटीक समाचार

Published on – 13 February 2020

## फरवरी माह का प्रादर्श - 'गांज'

**भोपाल •** इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय के अंतरंग भवन वीथि संकुल में आज 'माह के प्रादर्श' श्रृंखला के अंतर्गत माह फरवरी के प्रादर्श के रूप में ग्राम सप्त पार्वती टोल, जिला मधुबनी, बिहार के मल्लाह समुदाय का गुरी (जलीय बीज) इकट्ठा करने का उपकरण 'गांज' का उद्घाटन संग्रहालय के निदेशक, डॉ. पीके मिश्र द्वारा किया गया। इस अवसर अनेक गणमान नागरिक उपस्थित थे। इस प्रादर्श का संकलन एवं संयोजन श्रीकांत गुप्ता द्वारा किया गया है। इस अवसर पर गुप्ता ने बताया कि प्रदर्शित प्रादर्श 'गांज' बिहार के मछुआरे समुदाय 'मल्लाह' द्वारा मखाने के बीज 'गुरी' एकत्र करने हेतु प्रमुखतः एक पारम्परिक उपकरण है। गुरी एकत्र करना मल्लाह समुदाय की एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है। जिला मधुबनी बिहारसे संकलित यह प्रादर्श बॉस की टोकरीनुमा बेलनाकार, आगे से चौड़ा व खोखला उपकरण है।





News Published in –

  
**THE TIMES OF INDIA**

Published on – 13 February 2020

## Gaanj Is Feb's Exhibit Of The Month At IGRMS

February's 'Exhibit For The Month' at IGRMS is Gaanj – a tool used by fisherfolk to collect aquatic seeds. Explaining the exhibit, an official of IGRMS said, "Gaanj is a traditional tool used by Mallah fisherfolk community of Bihar for collecting an aquatic seed called Gurri. Collecting Gurri is an important economic activity of this community. Collected from Madhubani district of Bihar, Gaanj is a basket-shaped, a cylindrical



object with a broad circular opening in the front and closed and projected rear end. It can

be conveniently dragged into the shallow water by holding it with the right or left hand; allowing the thorny Makhana seeds to enter inside along with muds"

Visitors were also explained about the technique used in the making Gaanj. It is made of bamboo and cane and has a typical horn-like appearance. Monthly exhibits are series to engage awareness about the traditional knowledge systems of the country, said the official.



News Published in –

**The Hitavada**

Published on – 13 February 2020

## EoM: 'Gaanj' is a traditional equipment to collect Makhane

■ Staff Reporter

PEOPLE will get the chance to know about the traditional equipment, 'Gaanj', used by the fishermen community in Bihar to collect the Lotus seeds, known as Makhana, in the newly-arrived Exhibit of the Month (EoM), inaugurated at Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya (IGRMS) on Wednesday.

'Gaanj' will be displayed in the Veethi Sankul open air museum of the museum in the February month, under the popular series of exhibits displayed by the museum. 'Gaanj' has been brought by the authority from Sapt Parvati Toll village, situated in the Madhubani district of Bihar. The exhibit of the month was inaugurated by the Director of the Museum, Dr PK Mishra, who was also joined by huge number of visitors, to see the traditional equipment, made up from basket.

"Bihar's traditional equipment, 'Gaanj' is used by the fishermen community, 'Mallah' to collect Makhana seeds, locally known as



The traditional equipment, 'Gaanj', brought from Bihar at IGRMS.

'Gurri'. Collection of the aquatic seed, Makhana, is an important economical activity for the fishermen community. Brought from



The Exhibit of the Month being inaugurated at IGRMS.

Madhubani, Bihar, the traditional equipment, Gaanj, is made up from bamboo and looks similar to a bamboo basket. It is broader and hollow from the front side. This equipment, after submerging into water, is dragged to collect the seeds from the swampy mud. After which, Gurri is obtained after clean-

ing it from water", said Srikant Gupta, after the inauguration of the exhibit of February month.

Looking similar to a strong and sturdy horn, 'Gaanj', made up from bamboo and cane, is hollow cylindrical equipment which is broader at front side. Its narrower back side, closed at the end, is used by

the fishermen to hold the equipment and drag it beneath the water to collect the precious seeds, known as 'Gurri'. 'Gurri' commonly known as Makhana, is an aquatic seed, which is used by many people in religious worshipping and other cultural rituals. Makhana is a prominent material in making sweets, mixture, puddings, and other sweet delicacies. Despite of being tasty, the aquatic seed has a high nutritional value. It is filled with healthy elements like Vitamins, proteins, calcium, minerals, etc.

Madhubani is mainly known for the extensive production of Makhane in Bihar. It is mainly used in religious occasions and other festivals. In the popular festival of the region, 'Kojagara', family of the bride, prepare various dishes from Makhane, and offer it to the family of groom. 80% of the total Makhane production of the country is done only in Bihar, the rest of the production is done in other states like Manipur, Assam, West Bengal, Odisha, etc.





News Published in –



Published on – 13 February 2020

## ‘Gaanj’ on display at IGRMS

STAFF REPORTER ■ BHOPAL

Under the popular museum series “Exhibit of the Month” of Indira Gandhi Rashtriya Manav Sangrahalaya, a traditional object is displayed in the appearance for a whole month. The exhibit for the month of February, 2020 – “Gaanj”, an implement for collecting Gurri (aquatic seeds) from Village Sapt Parvatti Tol, Madhubani, Bihar is on display in the indoor exhibition building – Veethi Sankul.

The “exhibit of the month” has been inaugurated by Dr PK Mishra (Director, IGRMS). On this occasion renowned people were present. This exhibit of the month has been curated by Shrikant Gupta (Museum Associate).

**The “exhibit of the month” has been inaugurated by Dr PK Mishra (Director, IGRMS)**

On this occasion, Shrikant Gupta said that, the present ‘Gaanj’ is a traditional implement used by the Mallah fisherman community of Bihar, primarily for collecting Makhana an aquatic seed locally called ‘Gurri’. Collecting of Gurri is an important economic activity of this community. Collected from the Madhubani District of Bihar, ‘Gaanj’ is a basket-shaped, nearly a cylindrical body with a broad circular opening from the front with the closed and projected rear

end.

It can be conveniently dragged into the shallow water by holding it with the right or left hand; allowing the thorny Makhana seeds to enter inside along with muds.

By cleaning muds with water fresh Gurri (seeds) are collected.

Process or technique for the making of Gaanj – ‘Gaanj’ is an implement made of bamboo and cane having a wide and cylindrical hollow body extended to a projected and closed rear end that helps in easeful operation to drag inside the water by holding it with right or left hand.

The exhibit has a typical shape of a horn-like appearance that helps the user in the collection of Makhana seed called ‘Gurri’.